श्रीरामचरितमानस

दोहा:

संकर चापु जहाजु सागरु रघुबर बाहुबलु ।
बूड़ सो सकल समाजु चढ़ा जो प्रथमहिं मोह बस ॥
261 ॥

अर्थ: शिव जी का धनुष जहाज है और श्रीरामचन्द्र जी की भुजाओं का बल समुद्र है। [धनुष टूटने से] वह सारा समाज डूब गया, जो मोहवश पहले इस जहाज पर चढ़ा था। [जिसका वर्णन ऊपर आया है]

बंदी मागध सूतगन बिरुद बदहिं मतिधीर ।
करहिं निछावरि लोग सब हय गयधन मनि चीर ॥
262 ॥

अर्थ: धीर बुद्धिवाले, भाट मागध और सूतलोग विरुदावली (कीर्ति) का बखान कर रहे हैं। सब लोग घोड़े, हाथी, धन, मणि और वस्त्र निछावर कर रहे हैं ॥

संग सखीं सुंदर चतुर गावहिं मंगलचार ।
गवनी बाल मराल गति सुषमा अंग अपार ॥
263 ॥

अर्थ: साथ में सुंदर चतुर सखियाँ मंगलाचार के गीत गा रही हैं; सीताजी बालहंसिनी की चाल से चलीं। उनके अंगों में अपार शोभा है।

बलराम कुमार

Scanned with CamScanner

दोहा

रघुबर उर जयमाल देखि देव बरिसहिं सुमन।
सकुचे सकल भुआल जनु बिलोकि रबि कुमुदगन।।
264।।

अर्थ: श्रीरघुनाथ जी के हृदय पर जयमाला देखकर देवता फूल बरसाने लगे। समस्त राजागण इस प्रकार सकुचा गये मानो सूर्यको देखकर कुमुदोंका समूह सिकुड़ गया हो।।

गौतम तिय गति सुरति करि नहिं परसति पग पानि।
मन बिहसे रघुबंसमनि प्रीति अलौकिक जानि।।
265।।

अर्थ: गौतमजी की स्त्री अहल्याकी गति का स्मरण करके सीताजी की अलौकिक प्रीति जानकर रघुकुलमणि श्रीरामचन्द्र जी मनमें हँसे।।

डॉ. बलरामकुमार
हिन्दी-विभाग
डॉ. एल.के.वी.डी.
कॉलेज ताजपुर
समस्तीपुर

बलराम कुमार

समाप्त (बालकाण्ड)
212-265 तक।